समर्पण

जिन्होंने सम्यक्त्व की *Entry pass*
लेकर मोक्ष में खुद की
Ticket बुक करवाई

Please Carry your Samyak Darshan Certificate for security check

युगप्रधानाचार्यसम
प.पू.पं श्री चंद्रशेखरविजयजी म.सा.

* दिव्याशीष *

सिद्धांत महोदधि सच्चारित्र चूडामणि
पूज्यपाद आचार्य श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराज के
विनय पूज्यपाद युगप्रधानाचार्यसम
पू.पं.प्रवर श्री चंद्रशेखरविजयजी महाराज

* लेखक *

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

* प्रकाशन *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट
102-ए, चंदनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर
पोस्ट ऑफिस के सामने, भट्ठा, पालडी, अहमदाबाद-7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश भाई
373, मिंट स्ट्रीट, राजेन्द्र काम्पलेक्स
(महाशक्ति होटल के पास)
चेन्नई-79 फोन: 9841067888

विनित जैन
1, पल्लीयप्पन स्ट्रीट,
(अग्रापिले स्ट्रीट के पास) चौथा माला
चेन्नई-79 फोन: 9566292931

* मुद्रक *

DESIGN & PRINTED BY
Z Firsst Look
9597511135

॥ नमोऽस्तु तस्मै तव शासनाय ॥

मेरी प्रतिज्ञा (MY PLEDGE)

* सुदेव *

1.राग+द्वेष+अज्ञान से संपूर्ण रुप से जो मुक्त हो चुके है ऐसे वीतराग श्री अरिहंत परमात्मा ही मेरे सुदेव (भगवान/देव/प्रभु/ईश्वर/परमेश्वर तत्त्व/God/Almighty-जैसे शब्दो से माने जानेवाले) सर्वोच्च श्रद्धा-आस्था-भक्ति के स्थान रुप एकमात्र नाथ/नायक (=सुदेव) है ।

2. श्री आदिनाथ (ऋषभदेवजी) भगवान से लेकर श्री महावीरस्वामीजी ऐसे 24 तीर्थंकर एवं श्री सीमंधरस्वामी आदि विहरमान(=जीवंत) जिनेश्वर भगवान ही श्री अरिहंत प्रभुजी होते है ।

3.श्री अरिहंत प्रभुजी साक्षात् स्वरुप में जैसे दर्शनीय, आदरणीय है। इसी तरह श्री अरिहंतप्रभुजी का नाम/चित्र/मूर्ति/स्थापना एवं पूर्व अवस्था में रही हुई आत्मा यह सब बराबर (तूल्य) दर्शनीय, वंदनीय, नमनीय, पूजनीय, सत्कारणीय, सम्माननीय-स्तवनीय-स्मरणीय आदरणीय अवश्य होते है ।

4.श्री अरिहंत प्रभुजी की प्रतिमा की स्तुति-स्तवना-भक्ति करने से पापकर्म दूर होते है और उन्नतिकारक पुण्यकर्म का बंध होता है । इसी तरह प्रतिमाजी की पक्षाल-चंदन-पुष्प-धूप-दीप-फल पूजा एवं अंगरचना(आंगी) वगैरह तरह तरह की पूजा करने से भी पापो का क्षय+शुभ पुण्य का लाभ होता ही है । अज्ञानता-प्रमाद-अश्रद्धा-

अनुपयोग-उपेक्षादि दोषो से होने वाली कुछ अविधि-अजयणा-अनुचितता को जैसे जैसे कम /दूर करना होता है, मतलब की ज्ञान-श्रद्धा-जागृति-उपयोग-उल्लासादि जैसे जैसे बढते है और फलस्वरुप विधि यतना(जयणा)-औचित्य भी बढते रहते है वैसे ही निर्जरा+शुभबंध का प्रमाण अधिकाधिक होता रहता है ।

5.श्री अरिहंत प्रभुजी 100%ज्ञान की प्राप्ति कर लिए है । और 0% पाप की जिंदगी जी रहे है । अत: उनके तुल्य संपूर्ण ज्ञान+श्रेष्ठ चारित्र जीवन हमे भी प्राप्त हो, इसी शुद्ध भावना से ही प्रभुजी की पूजा-भक्ति करनी चाहिए और करनी ही चाहिए ।

6.श्री माणिभद्रजी, श्री घंटाकर्णजी, श्री भैरवजी, श्री भोमियाजी, श्री खेतलाजी वगैरह (जैसे) अधिष्ठायकदेव या कुलदेवता...या

श्री मंगलदेव, श्री शनिदेव, श्री राहु-केतु जैसे ग्रह देवता...एवं श्री पद्मावती, श्री चक्केसरी देवी, श्री लक्ष्मीदेवी, श्री ओसियादेवी, श्री झंकार देवी, श्री सच्चियामाताजी, श्री सुंधा माता, श्री अंबिकादेवी (अंबा माता), श्री शक्तिदेवी, श्री गायत्रीदेवी, श्री चामुंडादेवी, श्री महालक्ष्मी माता, श्री महाकाली देवी, श्री गौरीदेवी जैसी अधिष्ठात्री देवी या कुलदेवी जैसे देव-देवीया भगवान की तरह श्रद्धा करने योग्य, पूजा-आरती करने योग्य नही होते है । मात्र प्रणाम पात्र है ।

यह सभी देव-देवीयाँ संसारचक्र में घूमनेवाले और उसी घूमने में कुछ मर्यादित समय के लिए ही, चार गति में से 1 देवगति में गए हुए जीव है । हमारी तरह ही राग-द्वेष अज्ञान से भरे हुए है । वे सब अपना अपना आयुष्य पूरा होने पर वापस मनुष्य-तिर्यंच (पशु) नरक गति में जाने वाले ही होते है । इसलिए उनको मात्र हमारे भाई-

बंधु या माता–बहन की तरह ही देखना–मानना चाहिए, भगवान नही ।)

7. श्री राम, श्री कृष्णा, श्री इशु (क्रिस्त), श्री गुरुनानक ,श्री बुद्ध, श्री सांईबाबा, श्री बालाजी, श्री विनायक (गणेशजी), श्री पयगम्बर, श्री नारायण, श्री स्वामीनारायण, श्री रामदेव, श्री विट्ठलजी, श्री बजरंगबली, श्री हनुमानजी इत्यादि (सभी अन्य धर्म के इष्ट देव के रुप में माने जाने वाले) संतपुरुष, योगीपुरुष, सत्पुरुष है । (वे भी मनुष्यावतार–जन्म को पाकर हमारी तरह इस दुनिया में आने वाले है । और आगे के जन्मों में देवगति वगैरह 4 गति रुप संसार में फिरने वाले होते है । वे वीतराग नहि हुए है। अत: वे भगवान नही है ।

8. उपर बताये गए देव–देवी+ संतपुरुष हमारे से गुणो में आगे भी हो सकते है । अत: वे अनादर–अपमान के योग्य नहि समझना, किंतु पुरे आदर के दृष्टि से सम्मान रखना । परंतु उनके साथ हम प्रणाम/जयजिनेन्द्र का ही व्यवहार कर सकते है । दो हाथ जोड सिर्फ अभिवादन करना पर्याप्त है । श्री अरिहंतप्रभुजी की तरह उनको खामासमणा देना=ढोक लगाना या साष्टांगदंडक (पूरा उल्टा लेट कर नमस्कार) करना ये सब बिलकुल गलत है।

9. देव–देवी के पूजन–हवन–होम–जापादि कुछ भी नहि करना चाहिए ।

10. श्री अरिहंत प्रभुजी के शासन की सलंग परंपरा में दीक्षा का स्वीकार करने वाले,

(1.)संसार-समाज-स्वजनों का त्याग कर सर्वविरति धर्म=पाँच महाव्रतो का पालन करने वाले ।

(2.) वाहन+वीज संचालित यंत्र (electronic appliances, e.g light, fan, A.C, T.V, Mike, mobile, laptop, computer, tab, etc.) + वित्त(धन-दोलत=सोना-चांदी-हीरे-मोती-रत्नों-currency notes-Monetary certificates, documents, fixed assets, Eg. Lands, Flats, bunglows, factory etc.) ये सब को use करना तो दूर की बात है, टच भी नहिं करते । अपने नाम पर न रखे, दूसरो के नाम पर रखकर खुद संभाले-अधिकार रखे, मार्गदर्शन देकर हक रखे, ये सब कुछ भी न करने वाले ।

(3.) कोई भी कारण से कच्चा पानी Bathroom, washroom, basin का उपयोग नहि करने वाले, निष्कारण अपने लिए बनाई गई या अपने लिए खरीदी गई, या अपने लिए सामने लाई गई गोचरी (=आहार-पानी की चीज वस्तुए) नहि लेकर अनिश्चित रुप से अचानक अलग-अलग घरो से थोडा थोडा भिक्षा के रुप में ही लेकर गोचरी (आहार प्राप्ति) करने वाले

(4.)अल्पमूल्य वाले+सादे+सिर्फ सफेद रंग के ही कपडे पहननेवाले एवं झगमग=white & white = हमेशा स्वच्छ सुंदर (upto date) कपडे रखना एसी मनोदशा में न रहकर अधिकांश मलिन वस्त्रों को ही धारण करने वाले (साबून का उपयोग नहि करने वाले)

(5.) वस्त्र-पात्र, पुस्तक जैसे संयमोपयोगी उपकरण(सामान) भी अति मर्यादित रखकर जीवन निर्वाह करने वाले (निष्कारण extra सामान को Box-Bag मे भर भर कर यहाँ वहाँ भेजना-संग्रह करना-lock करवाना ऐसा कुछ भी न करना पडे और विहार में भी खुद का सामान खुद ही उठाकर लेने से कोई भी प्रकार के वाहन (motor vehicle or cycle) में न रखवाना पडे इतना ही अल्प सामान होता है।)

(6.) वहोरने के लिए दूर नजदीक के अन्य प्रांत /नगर/शहर/गाँव या विस्तार से सामने लाए गए कोई भी सामान (कपडे/stationery/खाद्य पदार्थो/अन्य परचूरण सामग्री) को नहि लेने वाले...

(7.) बाजार का hotel का company prodcuts ऐसे कोई भी अभक्ष्य-बासी (जैसे मिठाई-फरसाण-junk food-Biscuits-Icecream-chocolate-soft drinks)पदार्थो को सर्वथा छोडने वाले।

(8.) सामान उठाना-काप निकालना-गोचरी पानी लाना-झाडू निकालना कुछ चीजे मँगवाना/भेजना...जैसे कोई भी छोटे-बडे काम को गृहस्थ के पास नहि करवाने वाले (सब कुछ स्वयं करने वाले...)

(9.) एक ही जगह पर न ठहरकर हर महिने-महिने विहार करके नजदीक-नजदीक के क्षेत्रों को स्पर्शना करते करते..... और चार महिना एक ही स्थान पर रुककर मासकल्प विहार को पालन करते न ज्यादा, न ही कम .....ऐसे संतुलित विहार चर्या का आचरण करने वाले।

(10.) आहार-विहार-निद्रा का समय छोडकर प्रतिदिन कम से कम

8-10-12 घंटे स्वाध्याय शास्त्रों का पुनरावर्तन करने वाले ।

(11.) श्री जिनागम शास्त्रों (=निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि-वृत्ति सहित मूल 45 आगम) एवं इनके आधार पर रचना किए गए प्रकरण शास्त्रों (महापुरुष रचित शास्त्रों) के उपर पूरी श्रद्धा रखकर तदनुसार आचार-विचार का पालन प्रचार करने वाले... ऐसे सुविहित -संविग्न-गीतार्थ गुरु भगवंत ही मेरे सुगुरु के रुप स्वीकार करने योग्य है ।

11. सभी सुगुरु भगवंतो के प्रति पूर्ण आदर आस्था-आज्ञांकित भाव रखना मेरे लिए जरुर कल्याणकारी है । उनकी सेवा-भक्ति-वैयावच्च सच्चें बहुमान भाव से करना और विधि विवेक के साथ करना सर्वोत्तम सौभाग्य है ।

(1) सुगुरु के गुणों से युक्त न होने से जो मात्र बाहरी वेश से साधु-जीवन में है, उनको सुगुरु मानना-श्रद्धा करना-अनुसरण करना आदरना ये सब मेरे लिए आत्मघाती है ।

उनके प्रति द्वेष तिरस्कार-हीनता की भावना (स्वयं से भी हल्के है ऐसा सोचना) ये सब बिल्कुल न करके...बस दूर रहना-उपेक्षा करना-कभी कबार अवसर आ जाने पर औचित्य-सज्जनता से सहायता बताकर कर्त्तव्य निभाना, मगर सुपात्र की बुद्धि न लाना ये ही सही रास्ता है ।

12. सुगुरु भगवंत साक्षात् विद्यमान होने से हमारे विशेष उपकारी होते है । फिर भी आखिरकर वें पूज्य भी परमात्मा श्री अरिहंत प्रभु के शासन के साधक ही है। अत: हर हालत में सुगुरु भगवंत से भी सुदेव का ही महत्व बहुत ज्यादा होता है । सुदेव के प्रति श्रद्धा-भक्ति-पूजा-समर्पण-द्रव्यार्पण (धन व्यय) जितना होता है उससे अधिक

(या बहुत अधिक) श्रद्धादि यदि सुगुरु के प्रति भी हो (कुगुरु/ कुदेवादि प्रति तो होना ही नहि है...), तो यह भी अत्यंत अनुचित– अक्षम्य– अमान्य बनता है ।

13.स्त्रीवेदमेंचारित्रकीप्राप्ति+पालना, मूर्तिपूजाकीआवश्यकता, प्रभुवीर के पाँच कल्याणक, जैसे सिद्धांत और संविग्न सामाचारी के मानने=करने में जो आगे होकर सदुपदेश देते है.... इन सब का विरोध नहि बल्कि समर्थन+समाचरण करते है, वे ही प्रभुजी के शासन की मूल परंपरागत सुसाधु होते है । वे ही सुगुरु माननीय है ।

14. दुषम(=दुर्बल) काल के प्रभाव से शास्त्रीय आचार क्रियाओं में थोडा बहुत समझौता करना पडता हो, फिर भी पूर्वोक्त महत्व के 14 पोइंट्स में जो मक्कम –अडग+काफी संतुष्टताकारक पालन वाले रहते हुए साथ साथ बाकी के भी समिति–गुप्ति–श्रमण धर्म वगैरह उत्तरगुणों में अपनी शक्ति का पूरा उपयोग करने में उद्यम(=प्रयत्न) शील हो और जो कुछ पालन न कर सका जाए वे सब आचारो में भी अपनी कमजोरी को स्वीकार ने वाले और सही=उत्सर्ग=आदर्श आचार क्या होते है यही बात को आगे करके – हमेशा सत्य पक्षपाती एवं सच के ही प्ररुपक(बताने वाले) हो वे ही सुगुरु होते है ।

सुधर्म

श्री अरिहंत प्रभु के शासन में बताया जाने वाला, सुगुरु भगवंतो के पवित्र मुख से सुनाया जाने वाला, आज के काल के अनुरुप एक दिग्दर्शन के रुप में आगे रखा जाने वाला आचार मार्ग (जो आगे इस विषय में संकलित किया जाता है ।) और उसके साथ जुडा हुआ भाव =शुभ परिणाम यही सुधर्म है । (जो जो भी मुख्य नियम व्रत दीपिका में लिए गए है–वे सभी धर्म का स्वरुप है– यह श्रद्धा अनिवार्य होती है ।

(1) मनुष्यभव-आर्यदेश (=इश्वर तत्त्व को मानने+श्रद्धा से स्वीकारने वाली प्रजा जिस राष्ट्र/प्रांत में हो वह आर्यदेश)-मर्यादाप्रधान संस्कृति-जैन कुल-जिनधर्म-खानदान परिवार-सुखी कुटुंब-संपत्ति-सत्ता-संतान-शिक्षण-शक्ति-समझ-बुद्धिमत्ता-शरीर की पूर्णता-रुप-स्वर वगैरह ढेर सारी अच्छी=इष्टवस्तु - व्यक्ति - वातावरण की प्राप्ति सिर्फ पुण्य के उदय में ही होती है । और जाने -अनजाने में भी, कोई भी स्वरुप में =कोई भी धर्म के नाम से श्री वीतराग अरिहंत प्रभुजी के द्वारा बताए गए दान-शील-तप भाव में से ही एक या ज्यादा धर्म का पालन करने से (इच्छा या अनिच्छा से भी धर्म करने पर ही) यह पुण्य कर्म का बंध होता है ।

अत: आज जो कुछ भी मुझे सुख-शांति-समृद्धि मिली है, जितनी भी अच्छी परिस्थिति=परिस्थितियों के बीच में मेरा जीवन चल रहा है.....इसके पीछे पुण्य एवं पुण्य के पीछे धर्म और धर्म के उपदेशक एक मात्र श्री अरिहंतप्रभुजी ही होने से यह परमात्मा ही मेरे सर्वश्रेष्ठ उपकारी है । उनकी अपार करुणा+कृपा के बल पर ही मेरा पूरा अस्तित्व है । वे मेरी आत्म की सुखी अवस्था के आधारभूत है ।

यह =ऐसी भावना=चिंतन=विचार, हर रोज सुबह उठकर बारह नवकार गिनने से पहले मन में लाना ।

(2) श्री अरिहंत प्रभु एवं प्रभु का शासन=आगम वचन=जिनवाणी=जैन दर्शन jain philosophy को छोडकर (उससे विपरित) कोई भी धर्म हो/धर्मगुरु हो वे सब झुठे=असत्य/अर्धसत्य=अविश्वसनीय=अश्रद्धेय है-ये बात रोज सोचना ।

(3) श्री अरिहंत प्रभुजी के अलावा और कोई भी देव-देवीयाँ या तो संन्यासी बाबा-फकीर के पास मानता मानना / भक्ति -श्रद्धा रखना, उनकी यात्रा नियमादि पालनी करना -यह सब बिल्कुल गलत=अहितकर होते है ।

अत: स्वत: ही ऐसा कुछ न करना और कोई और भी हमे यहाँ वहाँ जाने का बताए, तब उनको स्पष्टता से कहना- जो काम श्री अरिहंतप्रभूजी की भक्ति-श्रद्धा से भी नहिं होते है- वे कही और से भी होना असंभव ही है । हमारे ही कर्म के योग से अंतराय-उपाधि-अशातादि होते है और वे सब भी श्री अरिहंत प्रभूजी के नि:स्वार्थ भक्ति करने से ही दूर हो जाते है ।

(4) रोग-घाव-पीडा-अकस्मात्-चोट-आपत्ति-संकट वगैरह कोई भी शारीरिक कष्ट दु:ख-आपत्ति आने पर भी उसको दूर करने के लिए (A) श्री अरिहंत प्रभुजी को छोडकर बाकी के कोई भी इतर देव-देवी के मंदिर में नहिं जाना, (B) उनको हाथ नहि जोडना, (C) स्तुति नहिं करना, (D) सिर नहि झुकाना, (E) उनको भेट-नैवेद्य आदि नहि चढाना , (F) उनकी मानता नहि मानना, (G) उनके धाम-मंदिर- तीर्थ-संस्था-यात्रा-महोत्सव-पूजन हवन-पूजा जैसे कोई भी प्रकार के दान क्षेत्र में पैसे नहि देना (H)वहाँ के पूजा-पूजन-होम-हवन प्रसंग-महोत्सव में शामिल नहि होना (avoid) करने के लिए कुछ न कुछ बहाने देना पडे तो भी यह कम दोष है-मंजूर रखना) ।

(5) उनके कोई भी स्थान/धाम की बातो में interest नहि लेना ।

(6) उनके तीर्थ/संस्था/मंडल में सभ्य-ट्रस्टी नहि होना ।

(7) खुद होकर ही उनके मंदिर की प्रतिष्ठादि नहि करवाना ।

(8) अपने परिवार कुटुंब से ऐसे मंदिर /धाम नहिं बनवाना खुद ही होकर अकेले लाभ लेकर श्रद्धा-भक्ति से उनके मंदिर नही ही करवाना ।

(9) इतर देव-देवी के मंदिर क्षेत्र-धाम तीर्थस्थान में...
(A) सिर्फ देखने के लिए भी नहि जाना ।

(B) श्रद्धा से दर्शन करने नहि जाना

(C) किसी मित्र-स्वजन business partner-Party के साथ भी नहिं जाना (उनका आग्रह रहे तो कुछ भी बोलकर avoid करे)

(D) किसी के आग्रह से जाना ही पडे तब हाथ नहीं जोडना

(E) हाथ जोडना पडे तो श्रद्धा से नहि (मगर कोई अच्छे=सज्जन आदमी व्यक्ति को जैसे नमस्ते करते है, ऐसे मात्र औचित्य-शिष्टाचार के रुप में ही करना ।)

(F) सिर नहि झुकाना/साष्टांग दंडक जैसा कोई भी नमस्कार न करे ।

(G) उनके मंत्र, स्तोत्र पाठ, एकवीसा, पचीसा, एकतीसा, चालीशा जैसे कोई भी स्तुति पाठ वगैरह नहि बोलना

(H) उनको फूल-हार-सिंदुर वगैरह नहि चढाना ।

(I) चूंदडी चढाना-नारियल रखना-जैसा कुछ नहि करना ।

(J) कोई फल मिठाई-चावल-धान्य-तेल -घी-नैवेद्य न चढाना ।

(K) आरती नहि करना -आरती में खडे नहि रहना ।

(L) महा आरती–महापूजा –महापूजन–महाअभिषेक–महायात्रा जैसे कोई खास प्रसंग हो, तो भी नहि जाना/देखना भी नहि ।

(M) कोई भी तरह का दान पुण्य न करना ।

(N)पैसा भेट वगैरह देना ही पडे तो पाप मानकर ही देना ।

(O) मन्नत नहि मानना ।

(P) जाप–स्मरण–ध्यान नहि करना, माला न फिराना ।

11. इतर देव–देवी का प्रसाद नहि लेना ।

12. इतर देव–देवी के मंदिरादि का प्रसाद नहि खाना ।

13. इतर देव–देवी की भक्ति –भावना (संगीत सभा) में न बैठना ।

14. इतर देव–देवी के फोटु (चित्र) घर या दुकान–ऑफिस में नही रखना ।

15. इतर देव–देवी के फोटु गाडी– स्कुटर पर नहि होना ।

16. इतर देव–देवी का की बडी या छोटी कोई भी मूर्ति घर या दुकान या ऑफिस में नहि रखना ।

17. इतर देव–देवी की कोई भी मूर्ति आदि वाहन में नहि रखना ।

18. गणेशजी की मूर्ति/चित्र कुछ भी घर के बाहर नहि रखना ।

19. गणेशजी की मूर्ति/चित्र कुछ भी दुकान–ऑफिस के बहार न रखना ।

20. गणेशजी का नाम कोई भी जगह पर मंगल के रुप में लिखना/

लिखवाना/छपवाना नहि ।

21. पत्रिका-कंकोत्री कार्ड आदि में भी कोई प्रकार में भी श्री गणेशाय नमः जैसा कुछ भी नहिं लगाना ।

22. वैदिक (=हिन्दु) शास्त्रों की परंपरावाली विधि से शादी नहि करना/करवाना ।

23. उत्तरायण (पोंगल), महाशिवरात्री, जन्माष्टमी (गोकुलाष्टमी), शील सातम (शीतला सातम), कडवा चौथ, राखी (रक्षा बंधन=बळेव), गणेशोत्सव, नवरात्रि, होली-धुलेटी, दशहरा, दीवाली, क्रिसमस, न्यू यर, जैसे सभी मिथ्यात्व के पोषक त्यौहार है । इन में से कोई भी दिन पर्व के तौर पर नहि मनाना ।

(A) इन दिनों में लोग-रिवाज से चलती आती धार्मिक विधि नहिं करना ।

(B) इन दिनों में लोगों के जैसे उपवास-व्रत-पच्चक्खाण नहि करना ।

(C) स्कूल-कॉलेज-बाजार में छूटी नहि रखना-रखवाना ।

(D) सरकार की छूट्टी होने पर भी इन दिनो में उस त्यौहार को लेकर कुछ खास खाने-पीने-घूमने नहि जाना ।

(E) उत्तरायण-पोंगल (13-14-15 जनवरी) के लोकपर्व के दिनों में उंधीया-पुरी-दुधपाक जैसे special menu नहिं होना । बाहर से (तैयार बिकरी की जाने वाली सब चीजे अभक्ष्य ही होने से) नहि लाना । पतंग नहि चगानी (ग्रुप में मिलकर पिकनिक स्पोट जाकर नहि चगानी) ।

(F) शिवरात्री को जूआँ–शराब पीना... इन सबमें कैसे भी करके नहि जूडना।

(G) जन्माष्टमी के जुलुस को कुतूहल वृत्ति से भी नहि देखना, उसमें पैसे देना और कोई सहायता करना ये सब करने से दूर रहना ।

(H) शीली (शीतला) सातम के उपलक्ष्य में बासी भोजन/ठंडा खाना/अगले दिन की बनी हुई चीजे ही खाना–ये लोक रीती को नहि अपनाना ।

(I) रोटी पूरी–भाखरी–सब्जी–चावल–दाल–मिठाई–फरसाण बासी करके नहि रखना–खाना–खिलाना । माताजी की पूजा करने नहि जाना ।

(J) शीली सातम है सो चौका चालू नहि करते ऐसा नहि मानना/करना । उस दिन नमकीन–खाखरा पक्की मिठाई जैसी भक्ष्य चीजे भी खाकर चूला नहि करना – ये बात गलत ही होती है । हररोज की तरह रसोई कर सकते है ,ऐसा ही मानके करना ।

(K) राखी को लेकर भाई बहन के रिश्ते को नहिं मनाना ।

(i) बहन (बहनों) को राखी बांधने के लिए नहि बुलाना–मना करना ।

(ii) भाई (भाइयों) के वहां जाकर राखी नहीं बांधना–वहाँ जाना ही नहि ।

(iii) घर में साथ में ही रहने वाले भाई–बहनो को राखी नहि बंधवाना/बांधना ।

(iv) इस अजैन त्योहार के निमित्त कोई भी भेंट सोगाद का रीवाज

नहि रखना–बंध करना–अब तक जो कुछ किया हो उसका प्रायश्चित करना ।

(v) अगर बहन को (रुपये या चीज सामग्री की) गिफ्ट देना ही हो तो भी इस अवसर पर यह काम नहिं ही करना । कोई और अवसर पर (जैसे की क्षमापना पर्व (सवंत्सरी), नूतन वर्ष का.सु. एकम, भाई दुज) वगैरह ये व्यवहार कर लेना पडे तो भी ठीक, हो तब तक तो राखी के समकक्षीय रिवाज कहीं भी –कभी भी नहि रखना ।

(vi) धर्म के भाई–बहन या परिचय में आकर माने जाने वाले संबध को लेकर बनने वाले भाई–बहन–ये सब वाकइ मे गलत है ...सो दूर रहना...

(K) नवरात्री में अम्बे माताजी की स्थापना नहि करना/ आरती नहि करना एवं करवाना ।

* नवरात्री के नाम पर होने वाले रात्री–गरबा–दांडिया रास में नहि जुडना ।

* ऐसे आयोजनों को करने में रस नहि लेना + काम नहि करना ।

* ऐसे आयोजनों के लिए चंदा इकट्ठा नहि करना/कराना ।

* ऐसे आयोजनों के लिए चंदा इकट्ठा किया जाये तो उसमें नहि देना ।

* ऐसे आयोजन जहाँ भी होते है, वहा कही भी मात्र देखने भी नहि जाना ।

* ऐसे आयोजन जहाँ भी होते है, वहा कही भी खेलने भी नहि जाना ।

* ऐसे आयोजन जहाँ भी होते है, वहा कही भी खेलने जाने को भी सम्मति नही देना।

* ऐसे आयोजन जहाँ भी होते है, वहा कही भी खेलने जाने को भी समझाकर रोकना ।

* ऐसे आयोजन जहाँ होते है, वहा के आस-पास से भी नहि जाना-गुजरना ।

* नवरात्रि में गरबा खेलने/देखने जाना ही है, तो परिवार के साथ जाना ।

* नवरात्रि में गरबा खेलने/देखने जाना ही है, तो 10-11 बजे वापस लौटना ।

* नवरात्रि में गरबा खेलने/देखने जाना ही है, तो स्पेशियल ड्रेस में नहि जाना ।

* जहां 50/100/200 से ज्यादा लोग हो वहा खेलने नहि जाना ।

(L) दशहरा के दिन की कोई भी धर्म क्रिया (देवी पूजनादि) नहि करना ।

(M) होली के आयोजन मे काम नहि करना-रस नहि लेना ।

* होली के आयोजन में पैसे नहि देना-साफ मना करना ।

* होली के धार्मिक रिवाज आग जलाना वगैरह में नहि जाना ।

* होली की प्रसादी नहि लेना/मना करना/ खाना नहि ।

(N) धूलेटी की मझा नहि लेना ।

* पानी से नहि खेलना ।

* गुलाल से नहि खेलना ।

* अलग अलग रंगो से नहि खेलना ।

* गुब्बारे नहि भरना-भरवाना/नहि डालना-डलवाना/देखना नहि ।

* पीचकारी से पानी नहि उडाना ।

* सामूहिक तौर पर मनाए जाने वाले आयोजन में नहि जुडना ।

* सामूहिक तौर पर मनाए जाने वाले आयोजन में पैसे नहि लिखाना ।

* सामूहिक तौर पर मनाए जाने वाले आयोजन में जाना/खेलना नहि ।

(O) दीवाली का त्यौहार लौकिक रिवाज/परंपरा से नहि मानना ।

* दीवाली में मोज-मझा -भोग -उपभोग खास नहि करना ।

* दीवाली में प्रभु वीर के निर्वाण कल्याणक को ही मनाना ।

* शक्ति हो तो/शक्ति को बहार लाकर बेला करना-पौषधादि आराधना में जुडकर परमात्मा के प्रति प्यार जताना ।

(बेला न कर सके तो 1 उपवास-1 आयंबिल/2 शुद्ध आयंबिल=

चावल के उपर चार अंगूली जितना पानी लेकर सिर्फ चावल=पानी से आयंबिल करना 1 शुद्ध आयंबिल+1 एकासाणा या 2 एकासणा/2 बियासणा) ऐसे कोई भी तप जरुर करना और त्याग प्रधान पर्व बनाना ।

* सिर्फ 2/3/4 (या 5) द्रव्य से ही एकासणा-बियासणा करना ।

* फलका रोटी/सूकी सब्जी/सादे चावल/दाल-ऐसे साधारण द्रव्य ही छूटे नवकारशी पच्चक्खाण में भी लेना ।

* खास करके दूध-दही-गुड-कडाह (पक्कवान) विगई का त्याग करना ।

* पापड-चटणी-आचार-छाछ-फ्रुट-ज्युस-अभक्ष्य (बाजार की सब चीज) का विशेष कर त्याग करना ।

* का.सू.पुनम तक मेवा अभक्ष्य होने से दीवाली पर लाना/खाना नहि ।

* पटाखे फोडना नहि -बच्चों को समझाकर फोडने से रोकना ।

* पौषध न हो सके तब भी बहार घूमने जाना-मिलने जाना- ये सब नहि करना ।

* ज्यादा से ज्यादा समय प्रभु पूजा-भक्ति-दर्शनादि में लगाना ।

* सुगुरु भगवंत का योग है तो प्रवचन में अवश्य जाना ।

* फ्री टाइम में भी सामायिक करना और /अथवा श्री वीर चरित्र वांचनादि स्वाध्याय (पढाई) करें ।

* दो दिन 14/15 को प्रतिक्रमण करे ।

* श्री दीवाली का देववंदन करने जाना (सामूहिक न होवे तो घर में भी करना ।

* श्री दीवाली बेले का जाप - 60 माला गिनना ।

* वाहन–लिफ्ट–फोन मोबाइल –टी.वी विगैरह हिंसा का त्याग खास करना ।

(Q) क्रिसमस पार्टी –31 दिसंबर की पार्टी–न्यू यर का उत्सव जैसे कोई भी आयोजनो में धर्म की बुद्धि से या तो मजा लेने की इच्छा से भी कभी कही नहि जाना ।

(Q) इस तरह के प्रसंग में जाने–अनजाने से भी पैसे नहि देना ।

* बच्चो को स्कूल/कॉलेज में भी यह दिनों में कुछ आयोजन रखे जाये तो उसमे शामिल न होने का सिखाना+समझाना ।

ऐसे कोई भी त्योहार अवसर पर रिश्तेदार–मित्रवर्त्तूल (Friend circle)-clients, customers-party को gift -greeting card जैसा कुछ देना.. wish करना... पार्टी का आयोजन करना / जाना इन सब से व्यक्तिगत दोर पर या सामूहिक रुप में भी भाग नहि लेना । cake cutting-shampain उडाना ये सब कभी नहि करना /देखना ।

(R) गणेशजी(गणपति) के महोत्सव में किसी भी तरह से नहि जुडना । Society-Building-Area-street-group वाले मिलकर जब णेशजी बिठाते है तब इस कार्यवाही में अपना रस नहि रखना ।

* आस पास वाले जुडने को कहे तब मैं (हम नहि मनाते) ऐसा कुछ भी बोलकर अपनी असहमति साफ बता देना ।

* अगर चंदा इकट्ठा किया जाता है उसमें देने का आये तो मना करना (धर्म–अधर्म दोनो होता है उसमें हम दान नहीं करते है ऐसा कुछ उपर उपर से बोलकर टालना) ।

वहा कुतूहल से भी देखने नहि जाना/बैठना/देखना ।

वहाँ बांटेजाने वाले प्रसाद (प्रसादी) को नहि लेना खाना ।

(S) लोग रिवाज या कोई भी प्रचलना के मुताबिक सोमवार-मंगलवार-गुरुवार-शुक्रवार -शनिवार जैसे दिन वार को लेकर उपवास-आयंबिल-एकासणा जैसी कोई तपस्या न करना ।

(T) शासनदेवी, अधिष्ठायक देवता, क्षेत्रपाल देव, तीर्थरक्षक देव, विशिष्ट चमत्कार (परचा) दिखाने वाले देव वगैरह को प्रसन्न करने हेतु अथवा मंगल करने की बुद्धि से भी कोई वार/तिथि की तपश्चर्या न करना ।

(U) गुरु भगवंत की स्मृति उपकार स्मरण आदि को मन में लाकर भी कोई चौक्क्स वार का आयंबिल उपवास करना नहिं ।

(V) तीर्थ यात्रा तपश्चर्या-धनव्ययादि कोई भी सुकृत करने में कोई निश्चित मिति/दिन रखने में शास्त्रीय पर्वतिथि को छोड अन्य दिन सुद 1, सुद 7, सुद 11, सुद पूनम अमावसादि को किये जाने वाले यात्रा तप वगैरह से भी मनमानी होती है । अत: ऐसा न करे । जैसे गुरुवार-पुनम-शुक्रवार जैसे दिन /मिति की/नियत तपस्या यात्रा नहिं करना ।

(W) अष्टमी/चतुदर्शी+10/12 तिथि की आराधना सब से मुख्य होती है । अत: 14/8/5/11/2/15-0) की आराधना करना छोड, अपने मन में ही गौण-मुख्यता की गलत फैमी में फंस 10-5-11 की आराधना जिनेश्वर प्रभु/संविग्न गुरु भगवंत के उपलक्ष्य में भी न करना उचित है । क्रमश: पर्वतिथि आराधना से आगे बढकर बाद में श्री जिनकल्याणक-श्री गुरुभगवंत दीक्षादि-दिन उपकारी स्मृति आराधना करना ।

(X) पर्वाधिराज पर्युषणा, दो शाश्वती ओलीजी, तीन चौमासे, अट्ठाई की आराधना जरुर करना। तप–त्याग–पौषध–विषय–कषाय निवृत्ति, नियम–अभिग्रहादि । खास कर इन दिनो में अभक्ष्य भोजन–रात्रिभोजन–होटल, बाजार का भोजन – Fashionable-fancy- आकर्षक–प्रदर्शक–पारदर्शक–कपडे पहनना–घूमनेजाना–movies-funcions-shopping-sports-Entertainments-mobile के अलग अलग उपयोग...जैसी विशेष प्रवृत्तियों का त्याग करना, आज्ञा पालन का लक्ष्य गहराई से रखकर मनाना ।

(Y) प्रभुजी के जन्म–दीक्षा–केवलज्ञानादि कल्याणको को मनाने से भी ज्यादा उल्लास–उत्साह–उत्कर्ष...उपर के 6–अट्ठाई के दिनों में होना तप त्यागादि में प्रवृति और आरंभ–समारंभ (अशुभ क्रियाए–विषय–कषाय प्रेरित चेष्टादि से निवृत्ति यह पर्व दिनों में यशाशक्ति ज्यादा से ज्यादा करना (एवं 14–8–5–11–2, पुनम में भी ये समझना) ।

(Z) पर्वतिथि–पर्व अट्ठाई के उपरांत विशेष आराधना की शक्ति+ भावना रखकर प्रभु के कल्याणको के दिन भी तपस्याादि कर सकते है । और भी वीर्योल्लास (=सामर्थ्य) बढने पर/बढाते हुए कल्याणको की आराधना को भी चालू रखाते पू. उपकारी प्रभावक साधक गुरुभगवंतो के स्मृति दिनो की भी आराधना करना और भी विशिष्ट लाभकर समझ करना।

त्याग+आराधना एवं विराधना/त्याग का सामान्यतः यह क्रम संभाले।

संवत्सरी महापर्व–चौमासी महापर्व (तीन)–पक्खी (21)–शाश्वती ओलीजी (दो)=पर्युषणा महापर्व–चौमासी अट्ठाई (3)–अष्टमी हर महिने सुद–वद 8)– ज्ञानपंचमी –मौन एकादशी सुद पंचमी (हर

महिना) सुद अग्यारस–सुद 2, वद 2, 5,11 + पूनम–अमावस्या प्रभु वीर के पाँच कल्याणक अन्य तीर्थंकर भगवंतो के कल्याणक... श्री गौतामादि गणधर भगवंतो के दीक्षा दिन (शासन स्थापना), पूर्व महापुरुषो+ वर्तमना उपकारी गुरुभगवंतो के दिन....

26. अपने निवासीय शहर–नगर–गाँव से पैदल होकर तीर्थ यात्रा करने जाना श्रेष्ठ है । अत: प्रभु भक्ति करने 2–5–10–12–15 कि.मी की दुरी तक आनेवाले तीर्थ जिनमंदिर संकुल (धाम) जैसे स्थान पर दर्शन–पूजनादि करने सप्ताह/महिना/2–4–6 महिने/ सालभर में एक बार पैदल जाकर जिनेश्वर प्रभु की यात्रा करना । ।

* दूर के तीर्थ मंदिर तक वाहन में होकर जाने की बजाय शक्ति अनुसार+समयानुकूलता से नजदीकी तीर्थ/ मंदिर में जाने पर भी पैदल जाना वह सही यात्रा–चैत्यपरिपाटी होती है ।

अत: भले ही गाँव शहर में अंदर ही अंदर हो फिर भी अलग अलग मंदिर जाना और चलकर जाने से विधि जयणा पालना ।

* पर्व तिथि कल्याणक दिन को लेकर मूलनायक प्रभुजी की भक्ति करने उस उस मंदिर जान ।

* साधर्मिक बंधुओं का भी लाभ लेने हेतु अपने निवासीय विस्तार से ही 10/20/50/100 कि.मी की दूरी वाले तीर्थ की चैत्यपरिपाटी –तीर्थयात्रा–छ:रि पालक संघ का लाभ लेना ।

* बस–ट्रेन–प्लेन में होकर तीर्थ यात्रा करने करवाने से वह मंदिर की सफर होती है– यात्रा नही अत: कभी भी Travelling वाले प्रवास को यात्रा संघ ना नाम नहि देना...लाभार्थी को भी संघवी पदवी ऐसे प्रवासो से नहि दी जाय–नही मानी जाय–नही स्वीकार किया जाय...

* कम से कम 1 बार दिन में मंदिर दर्शन करने जाना । कम से कम महिने में 5 दिन पूजा करना

* साल भर में या 2 साल में 1 बार तीर्थ यात्रा के लिए जाना...वहां वेष परिधान-भोजन-खेलकुद-मौज शौक को लेकर किसी प्रकार की आशातना न हो जाय । यह समझ कर पूरा पालन करना ।

* नजदीकी मंदिर के ध्वजारोहण के प्रसंग पर अचूक शामिल होना ।

* शोभा यात्रा में साथ चलना (कम से कम 1 घंटा निकाल कर रहना)

*चारित्रसंपन्न सुगुरु के वंदन करने के लिए कम से कम साले में 1-2 बार जाना ही । (गांव में भी है तो हफ्ते में 2 बार)

* परमात्मा का चरित्र पढना, स्तवन-स्तुति याद करना ।

श्री जिनशासन
में प्रवेश पाने की
प्राथमिक पात्रता
याने
सम्यग्दर्शन
का स्वीकार
याने मान्यता को
साफ करना+
कायम रखना+
मजबूत बनाना

सम्यग्दर्शन=

Clarity of vision

Purity of belief

Surety of faith